6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए - (6)

(क) "धरती लहलहायेगी, झालो, नाचेगी-गायेगी" में अस्मिता बोध।

(ख) दलित साहित्य पर अंबेडकर का प्रभाव।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1069 **L**

Unique Paper Code : 2052103602

Name of the Paper : अस्मितामूलक हिंदी साहित्य (दलित विमरश, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श)

Name of the Course : **DSC Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. स्त्री विमर्श की परिभाषा बताते हुए साहित्य में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

आदिवासी विमर्श की अवधारणा को बताते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट करें।

2. 'यही सच है' के माध्यम से स्त्री की मूल संवेदना को दर्शाइए। (15)

अथवा

'पच्चीस चौंका डेढ़ सौ' कहानी समाज में व्याप्त जातिवादी व्यवस्था की पोल खोलता है। विवेचन कीजिए।

3. 'सोनवा का पिंजरा' कविता के माध्यम से वंचित वर्ग के जीवन को दर्शाया गया है। उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'कहाँ हो तुम माया' कविता में निहित स्त्री शोषण को दर्शाइए।

अथवा

"4 मार्च को अंग्रेजी की परीक्षा होने वाली थी। चिन्तामणि सिंह ने परीक्षा के एक दिन पूर्व शाम को मुझे अंपने निवास पर बुलाया था, ताकि मैं परीक्षा की तैयारी करा सकूँ। मैं निर्धारित समय पर उनके निवास पर गया तो देखा कि पहले से ही तेजबहादुर तथा मोहम्मद हनीफ वहाँ मौजूद थे। किन्तु सबसे चौंकाने वाली उपस्थिति थी हीरालाल की, जो मुझे बात की बात में गालियाँ दे पड़ते थे। मुझे देखते ही हीरालाल ने कहा, 'का रे चमरा तं येहों आ गयले।' इस पर मैंने उनसे कहा कि आप मुझसे इस तरह क्यों बात करते हैं? मेरा इतना कहना था कि हीरालात मेरे ऊपर शेर की तरह झपट पड़े और जब तक चिन्तामणि सिंह उन्हें पकड़े, वे तब तक मुझे चार चाँटे लगा चुके थे। ये वही हीराल्लाल थे, जो मुझे बुलाने के लिए हमेशा 'चमरा-चमरा' शब्द का इस्तेमाल किया करते थे।

तुमका के पहाड़

और काठी कुंड के उजड़ते

जंगल पुकार रहे हैं तुम्हें

तुम जहाँ भी हो लौट आओ माया!

लौट आओ!!

(ग) "भारतीय स्त्री की स्थिति में आदिम-युग की स्त्री की परवशता और पूर्ण विकसित समाज के नारीत्व की गरिमा का विचित्र सम्मिश्रण है। उसके प्रति समाज की श्रद्धा की मात्रा पर विचार कर कोई उसे पूर्ण संस्कृत समाज का अंग ही समझ सकता है, परन्तु उसके जीवन का व्यवहारिक रूप एक दूसरी ही करुण गाथा सुनाता है। सम्भवत: उस धर्मप्रधान युग ने स्त्री को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से उन्नत स्थान देकर ही अपने कर्तव्य की इति समझ लीय उसकी व्यावहारिक कठिनाइयों की ओर उसका ध्यान हो नहीं जा सका।

4. 'स्त्री के अर्थ स्वातंर्त्र्य का प्रश्न' की मूल संवेदना बताइए। (15)

अथवा

'जंगल से आगे' के माध्यम से चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष का विवेचन कीजिए।

5. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (8×3)

(क) "मास्टर शिवनारायण हत्थे से उखड़ गया। खींचकर एक थप्पड़ उसके गाल पर रसीद किया। आँखें तरेरकर चीखा, हंअबे तेरा बाप इतना बड़ा विद्वान है तो यहाँ क्या अपनी माँ...(एक क्रिया-जिन्हें सुसंस्कृत लोग साहित्य में त्याज्य मानते हैं)... आया है साले; तुम लोगों को चाहे कितना भी लिखाओ, पढ़ाओ... रहोगे वही-के-वही.. दिमाग में कूड़ा-करकट जो भरा है। पढ़ाई-लिखाई के संस्कार तो तुम लोगों में आ ही नहीं सकते। चल बोल ठीक से... पच्चीस चौका सौ... स्कूल में तेरी थोड़ी-सी तारीफ क्या होने लगी पाँव जमीन पर नहीं पड़ते। ऊपर से जबान चलावे है। उलटकर जवाब देता है।"

अथवा

"मुझे मालूम है ये गीत और नाच झालों को क्यों अच्छा न लगा।" झालो सोचती है इस भूख-पीड़ित धरती में नाच-गान क्यों? पहले भूख दूर हो। झालो ठीक कहती हैं। आज खाना मिला, कल मिलेगा... परसों... नरसों... एक महीना... दो महीना... फिर? और हमारे जानवरों के लिए भी चारा-पानी का इंतजाम द्य सरकार ने लाल कार्ड का इंतजाम किया है जिससे मुफ्त अनाज मिल रहा है। हफ्तावारी खर्च भी दिया है जो लाचार हैं उनको। जो काम करने लायक हैं उनको मेहनत-मजदूरी भेंट करा कर पैसे दे रही हैं-बाँध, पोखर, आहर, रोड सबका काम हो रहा है... और क्या चाहिए। नयी सरकार जीए।"

जेरकू ने कहा- "सब ठीक रहेगा नककू। खाना मिलता रहेगा, अनाज बँट ही रहे हैं और तब तक तो दूसरी फसल हो ही जायेगी। का झालो "अब हँस दे।"

(ख) मारे थानेदरवा बोलाइ, घरवा से हमें,

झूठइ बनावें गुनहगार।

जेलवा में मलवा उठवै मजबूर करैं,

केउ नहिं सुनत गोहार।।

देशवाँ आजाद अहै हम तो गुलमवाँ,

हमरे लिये न सरकार।

एस कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई',

हमरउ करावा उरधार।।

अथवा

झारखण्ड की धरती संताला

परगाना की माटी